अध्याय - 1

त्रिलोचन शास्त्री - जीवन परिचय

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

अध्याय – 1

त्रिलोचन शास्त्री – जीवन परिचय

छायावादोत्तर हिन्दी कविता के उभरते हुये कवियों में त्रिलोचन का महत्वपूर्ण स्थान है । वे उन कवियों में से हैं, जिनमें मानवता के उज्जवल भविष्य के प्रति एक बलवती आस्था विद्यमान है ।

त्रिलोचन प्रगतिवादी काव्य धारा के कतिपय चुने हुये कवियों में से एक हैं । कभी – कभी कुछ लोग उन्हें प्रयोगवादियों की श्रेणी में भी रख देते हैं । त्रिलोचन शास्त्री प्रगतिशील हिन्दी कविता के दूसरे दौर के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवियों में गिने जाते हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री का मूल नाम वासुदेव सिंह है और शास्त्री उनकी उपाधि है । "त्रिलोचन" नाम गाँव के संस्कृत गुरू श्री देवदत्त ने दिया था । त्रिलोचन जी का जन्म सम्वत् 1974 में भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया सोमवार तद्नुसार 20 अगस्त सन् 1917 में उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिरानी पट्टी, कटघरापट्टी में हुआ था।

इनके दादा श्री बलिराज सिंह एंव दादी श्रीमती रजासी (राज्यश्री) देवी थी । त्रिलोचन जी के पिता श्री जगरदेव सिंह सात फीट तीन इंच के हृष्ट – पुष्ट व्यक्ति थे[1] । जब त्रिलोचन जी मात्र 5 वर्ष के बालक थे, तभी इनके पिता ने सन्यास ले लिया और इनकी माता श्रीमती मनबरता देवी पर ही इनके लालन पालन की जिम्मेदारी आ गयी[2] ।

त्रिलोचन का बचपन अभिभावक – विहीन था । उनके पिता राम भक्त थे, उन्हीं से त्रिलोचन ने रामायण की चौपाइयाँ सुनी थीं और वह बहुत ही सहज याद हो गयी थीं । वे कबड्डी के खेल में भी छन्दों को मंत्र की तरह पढ़ते थे ।

6 वर्ष के बाल त्रिलोचन के सामने दोहरा संकट था, एक ओर माँ की रूढ़ि और दूसरी ओर बुआ का उदात्त मानवी गुण । इसी मानव प्रेम की कविता है, **"परदेसी के नाम पत्र"** । अवध की वह श्रद्धेया, सीधी – साधी, ठेठ ठकुराइन सिर्फ

---

1. वर्तमान साहित्य – अगस्त 92 – विभूति नारायण राय, पृष्ठ 45
2. भाषा त्रैमासिक – सितम्बर 1981 – सम्पादक – जगदीश चतुर्वेदी, पृष्ठ 99

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

इतना जानती थीं कि जीवन संघर्ष के लिये शरीर में बल तो होना ही चाहिए और कितना ही बल क्यों न हो, वह कम ही पडेगा । जवान लडका जितना खायेगा, उतना ही उसमें बल आयेगा, सीधी – सी बात और उतना ही वह दुश्मन (पट्टीदारों) से निबट भी सकेगा, जिसकी आगे जरूरत थी । वह खासी रोटियाँ इनके सामने रख देतीं और कहतीं– "बच्चू, अगर एक भी छोडी, तो समझ लो" । यह कभी – कभी बुरी तरह ऊब जाते थे, उनका एक ही इलाज था । माँ उलटा उन्हीं को पेड़ से टाँग देती थीं ओर बेभाव की उनको पड़ती थी । सोचिए वह कैसी माँ थीं, जो अपने बेटे को सचमुच फौलाद का बनाना चाहती थीं, उससे कम नहीं और बाप – जो तब तक गुजर चुके थे – उनके अंदर संतो का ज्ञान स्फुरित हुआ देखना चाहते थे । यही उनकी महती आकांक्षा थी[1] ।

त्रिलोचन शास्त्री का विवाह 11 वर्ष की अवस्था में हुआ था । उनकी पत्नी जयमूर्ति देवी उनसे 4 – 5 साल बड़ी थीं, पत्नी की मातृभाषा जौनपुर की अवधी – भोजपुरी मिली हुयी थी[2] । त्रिलोचन शास्त्री अब अकेले रहते हैं या अपनी पत्नी के साथ रहते थे । उनकी पत्नी का देहांत "सागर" मध्य प्रदेश में 19 दिसम्बर 1988 ई. को हुआ था । पत्नी के देहान्त के बाद उनका अकेलापन एक तरह से बढ़ गया है । इस परिस्थिति का सामना उन्होने बहुत मुश्किल से किया है ।

त्रिलोचन शास्त्री के दो पुत्र हैं– एक डॉ0 जय प्रकाश सिंह जो बनारस विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाते हैं । उनकी पत्नी का नाम उषा है जो जोरहाट – असम की रहने वाली हैं , और उनकी तीन सन्तानें हैं – गायत्री सिंह (पुत्री), रिपुंजय सिंह (पुत्र), मृगांका सिंह (पुत्री) । दूसरे अमित प्रकाश सिंह जो कलकत्ता में दैनिक "जनसत्ता" में समाचार सम्पादक हैं ।उनकी पत्नी का नाम उषा है जो ज्वालापुर – हरिद्वार की रहने वाली हैं और उनकी दो सन्तानें हैं : अद्रीश (पुत्र), पंखुडी (पुत्री) ।

त्रिलोचन शास्त्री की तीन बहनें थीं, जिसमें से दो त्रिलोचन से बडी थीं – मर्यादा ओर नन्हका, एक छोटी – उरेहा । त्रिलोचन शास्त्री के तीन भाई थे जिनमें से त्रिलोचन से बडे दो जो जीवित नहीं रहे – 1. रामसरन सिंह जिनकी 12 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी थी । 2. रामफेर सिंह जिनकी 8 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी

---

1. भाषा त्रैमासिक – सित्मबर – 1981 – संपादक – जगदीश चतर्वेदी, पृष्ठ 99
2. वर्तमान साहित्य – अगस्त – 92 – संपादक – विभूति नारायण राय, पृष्ठ 45

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

थी । एक भाई त्रिलोचन शास्त्री से छोटे थे जिनका नाम भगवनी सहाय वर्मा था। उनका जन्म 1923 में और मृत्यु 9 अप्रैल 1992 ई. को हुई थी[1]।

त्रिलोचन शास्त्री के घर में बुआ बडी थीं जो उसे मानती थीं । माँ बालक को पढ़ाने के पक्ष में नहीं थी । शमशेर ने लिखा है :– "बचपन ही में, उनके पिता ने उन्हें किसी संकल्प के कारण एक स्वामी जी की सेवा में सौंप दिया था ओर वह उनके शिष्य बने हुये आसाम से पंजाब तक कई बरस तक ..... बन, पर्वत, देहात घूमते रहे"[2] । त्रिलोचन की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव दोस्तपुर में हुयी थी । त्रिलोचन शास्त्री ने हिन्दी के साथ – साथ संस्कृत पढ़ना शुरू किया । उन्हीं के पडोस वाले गाँव में एक पण्डित देवदत्त रहते थे । त्रिलोचन को संस्कृत पढने की प्रेरणा उन्हीं से मिली । शस्त्री जी के गाँव में बसंत पंचमी से होली तक चौताल गाये जाते थे । हर चौताल के बाद उलारा गाया जाता था । उनके मन में कविता का संस्कार उसी को सुनते हुये पड़ा अर्थात कविता उन्होंने लोक से सीखी, पुस्तक से नहीं । त्रिलोचन जी ने उर्दू अपने अध्यापक माजिद हसन खाँ से सीखी थी । भाषा का शुद्धता का संस्कार उन्हीं से ग्रहण किया । त्रिलोचन ने दादी से मीरा और कबीर के पद सुने थे । रामचरित मानस स्वंय पढ़ना शुरू किया , क्योंकि घर में उसकी प्रति थी ।

शास्त्री जी ने काशी में भी शिक्षा प्राप्त की, काशी के गुरू का नाम स्वतंत्र माध्व संप्रदायाचार्य श्री दामोदर लाल शास्त्री थे । बाद में उन्होने बी.ए. तथा एम.ए. साहित्य – रत्न (पूर्वार्द्ध) अंग्रेजी साहित्य में बी.एच.यू. से किया ।

त्रिलोचन शास्त्री से गाँव की भोली – भाली लड़कियाँ और नौजवान और भी लोग अक्सर निजी पत्र लिखवाने आते रहते थे और वह बहुत सरस, बहुत अच्छे – अच्छे पत्र उनके लिये लिख देते थे । उनपर सबको बडा विश्वास था और हर चीज, हर बात, हर गीत, हर कविता, श्लोक और छंद वार्ताएं उन्हें सहज ही कंठस्थ हो जाती थीं ।

त्रिलोचन बहुत ही स्वाभिमानी व्यक्ति हैं और अपनी इस प्रकृति के कारण वो लगभग अकेले रहते हैं । पत्नी के साथ रहे हैं या अकेले रहते हैं किसी के साथ रहना उनको पसंद नहीं इससे उनकी कार्यशीलता पर प्रभाव पड़ता है ।

---

1. वर्तमान साहित्य – अगस्त – 92 – संपादक – विभूति नारायण राय, पृष्ठ–45
2. भाषा त्रैमासिक – सितम्बर – 1981 – संपादक – जगदीश चतुर्वेदी, पृष्ठ–99

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

त्रिलोचन अक्खड़ स्वभाव के व्यक्ति हैं । यह एक नेक दिल और साधु स्वभाव इंसान हैं । ज्यादातर तो वे कुर्ता – पायजामा ही पहनते हैं – पहले तो धोती कुर्ता पहना करते थे । शरीर मजबूत है, काठी मजबूत है, हड्डी मजबूत हैं । एकाध बीमारी के कारण मुखाकृति में कुछ परिवर्तन हुआ है । पहले वे दाढी – मूंछ नहीं रखते थे । अब वे दाढ़ी मूंछ रखते हैं । वे जैसे भीतर से हैं वैसे बाहर से भी प्रकट होते हैं। त्रिलोचन इस समय के एक बहुत समर्थ कवि हैं, इसमें तो अब किसी को संदेह नहीं है । त्रिलोचन जी बहुत ही दयालु एंव सबकी सहायता करने वाले व्यक्ति हैं । पैदन चलने का उन्हें बहुत अभ्यास था , शायद हिन्दी में सबसे अधिक पैदल चलने वाले लेखक त्रिलोचन हैं । त्रिलोचन आज़ादपुर मॉडल टाउन वाले मकान से पैदल यूनिवर्सिटी (दफ्तर) जाते और दिन – भर मुँह बाँधे रह कर सिर्फ चाय और पान पर सारा दिन काटते ।

दूसरों के मुँह से अपने बारे में चुप लगाये रखना लेकिन भीतर ही भीतर मगन रहना त्रिलोचन की खास अदा है । लिबास में (और काव्य में भी) इस तरह की सादगी कि अच्छों – अच्छों की सफेदी शरमा जाये । स्वभाव और लबों – लहजा ऐसा कि दूसरों को मुग्ध करता चले और नागवार गुजरने की भनक से कोसों दूर । आत्म सम्मान को जरा ठेस पहुँचे तो बस, तुनक मिजाजी ऐसा कि खुदा के घर भी न जायेगें बिन बुलाए हुए । त्रिलोचन घूमंतू कवि हैं ।

शास्त्री जी पूरा का पूरा निराला – काव्य जुबानी सुना सकते हैं, उन्होने कोशिश करके हिन्दी के शब्द – भण्डार पर गहरा हाथ मारा है, वे तत्सम, तद्भव, देशी – विदेशी काफी शब्दों का सही अर्थ और परिचय दे सकते हैं, उन्हें खडी बोली के अलावा अवधी के ग्राम्य – प्रयोगों का खासा अच्छा ज्ञान है, वे जर्मन, अंग्रेजी और फ्रेंच के शब्दों का सही उच्चारण अधिकारिक ढंग से बता सकते हैं,वे रामचरित मानस का पाठ करते हैं । पितृश्राद्ध में उनका विश्वास है । किस जमाने में संकट – मोचन में दैंनदिन हाजिरी दिया करते थे ।

वे खासे हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट हैं । वे अपनी जानकारी को गर्व की बात नहीं मानते । शास्त्री जी हिन्दी कविता के अधीत जानकार हैं उन्हें आदि – काल से लेकर सठोत्तरी कविता तक में रूचि है, वे "पृथ्वी राज रासो" ओर प्रयोगवाद पर समान रूप से बोल सकते हैं ।

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

त्रिलोचन की मातृ–भाषा भोजपुरी एवं खड़ी बोली व्यवहार की भाषा है । वे मूलतः स्थिरता के कवि हैं । त्रिलोचन हिन्दी भाषी अचंल की जातीय चेतना के कवि हैं । उदात्त और घनीभूत अनुभूति के साथ भी उनकी भाषा का स्वर बहुत ज्यादा नहीं बदलता । कविता का सम्पूर्ण स्वर सधा हुआ, छन्दानुशासन बहुत कसा हुआ और तटस्था बना रहता है । त्रिलोचन अवधी भाषा के विद्वान हैं । अवधी वे खूब अच्छी तरह जानते हैं । और भाषा विज्ञान में अच्छी गति हैं ।

अवध के गांव में पैदा होने वाले इस कवि ने बचपन ही से जीवन की विषमाताओं को नजदीक से जाना हैं । उसने गांव की जनता के लिये शिक्षा और संस्कृति के बन्द द्वार देखे । किशोरावस्था में ही उसे स्वंय अपनी शिक्षा को बीच मे ही समाप्त कर देना पड़ा । युवावस्था में बहुत दिनों तक उसने दर–दर की ठोकरें खायीं । परिवार से दूर रहते हुये उसके भीतर परिवार की ममता कौंधती रही । लेकिन बुरे दिनों से टूटा नहीं, बल्कि उसका मनोबल और भी दृढ़ हुआ । उसने गरीबी और अंधविश्वास के बीच मरती–जीती ग्रामीण जनता की मानवता को पहचाना और गांवों से दूर रहते हुये भी उसने उस मानवता को एक अक्षय प्रेरणा के रूप में अपने हृदय में सँजोये रखा ।

हिन्दी की देशज और प्रगतिशील कविता के चार–पांच बड़े कवियों में गिने–जाने वाले त्रिलोचन शास्त्री मनीषी और विद्वान की तरह बात करते हैं । जब संस्मरण सुनाते हैं तो जैसे विचार, दृश्य और कल्पना की एक नदी बहती दिखती है, हँसते है, तो मासूम बच्चे की तरह । सामने बैठकर बात करते व्यक्ति को वे जैसे सहसा उठाकर आने चिंतन के धरातल पर ले आते हैं और उससे बराबरी का रिश्ता बना लेते हैं । संस्कृत, फारसी, हिन्दी, अवधी, अंग्रेजी में जो भी उद्धरण देते हैं उनमे विद्वता का बोझ न होकर चिन्तन की शान्ति और भारहीनता होती हैं जो तुरन्त आपके अनुभव का हिस्सा बन जाती हैं । किसी बच्चे को भी अपने बराबर ले आने का अद्‌भुत गुण है, जो उनकी पूरी पीढ़ी मे रहा है । उनके साथ बैठ रहें और उन्हें सुनते रहें । वे कल्पना में अब काफी रहते हैं और कब कल्पना लोक से यथार्थ में आते हैं और कब यथार्थ से कल्पना लोक में जाते हैं– अगर आदमी इसके बारे में सावधान न हो तो उसे भ्रान्ति हो सकती हैं । उनमें एक कथाकार की प्रतिभा है । वे बहुत से संस्मरण सुनाते–सुनाते कहीं–कहीं अपनी ओर से संस्मरण रचते भी हैं ।

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

मार्क्सवादी कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का विशिष्ट व्यक्तित्व है । इन्होनें अपने सृजन को सिद्धान्त की व्याख्या का माध्यम नही बनाया और न रचनाओं में सिद्धान्तों को प्रकट होने दिया, इस प्रकार वे, मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक होकर भी, अपने कवि को इस विचारधारा से अलग रखे हुये हैं । उनकी कविताएँ काव्यत्व के निकर्ष पर आस्वाद्य हैं भले ही वे पार्टी–साहित्य में स्वंय की गणना न करा पायें । त्रिलोचनजी के कवि व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता है–परम्परा को स्वीकार कर प्रयोगों के लिये भी उदार अवकाश रखना । इनकी तीसरी विशेषता है–अपने कविकर्म के प्रति दीर्घ सूत्री वक्तव्य न देकर, रचना के माध्यम से ही अपनी रचना–धर्मिता के सम्बन्ध में प्रकाश डालना । त्रिलोचन के प्रिय कवि कबीर, तुलसी, गालिब और निराला हैं ।

त्रिलोचनजी के चौताल को सुनकर 'द्विजदैनी' ने उन्हे लिखने के लिये उत्साहित किया । तब फिर उन्होनें लिखना प्रारम्भ किया । त्रिलोचन में बहुत क्षमता है और उन्होनें काफी पढ़ा हैं, लेकिन उन्हें काम करने के लिये जैसी परिस्थितियाँ चाहिए थी वैसी उन्हें सुलभ नहीं हुयीं और शायद यह स्थिति बहुत दिनों तक बनी रही ।

त्रिलोचन ने आजीविका के लिए आज, जनवार्ता, समाज, प्रदीप चित्ररेखा, हंस और कहानी आदि पत्र–पत्रिकाओं में सहसंपादक का काम किया । एक अस्थिर पत्रकार का जीवन, कभी काम मिला, कभी बेकार । त्रिलोचनजी ने सन् 1930 से 35 में प्राइवेट शिक्षक पत्रकारिता का कार्य किया था और सन् 1939 से 41 तक 'कहानी' मासिक में बनारस में कार्य करते रहे ।

उन्होनें सन् 43 से 50 तक 'हंस' तथा 'चित्ररेखा'मासिक पत्रिकाओं में, तथा ज्ञानमंडल काशी के वृहद हिन्दी कोष में कार्य किया । 1952 से 53 तक गणेशराय इंटर कालिज डोमी, जौनपुर में अंग्रेजी शिक्षक के रूप में कार्य किया । इसके अलावा वह समय–समय पर अनेक कोषों के सम्पादन में सहायक रहे । 1953 से 54 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के 'हिन्दी–अंग्रेजी मानक कोष' में सहायक रहें । 1954 से जून 1959 तक हिन्दी शब्द–सागर, संशोधित परिवर्द्धित संस्करण में कार्यरत रहें । 1959 मे राँची के राष्ट्रीय प्रेस में प्रबन्धक के रूप में कार्य किया । 1960 से 1967 तक 'हिन्दी शब्द सागर' में कार्य किया । 1968 से 1972 तक विदेशी छात्रों को हिन्दी, उर्दू और संस्कृत पढ़ाते रहे । 1972 से 1975 तक

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

दैनिक 'जनवार्ता' के सहायक सम्पादक के रूप में बनारस में काम करते रहे । 1975 से 1978 तक 'हिन्दी ग्रन्थ अकादमी' में भाषा सम्पादक के रूप में भोपाल में कार्य किया । मई 1978 से मार्च 1984 तक दिल्ली विश्वविद्यालय उर्दू विभाग की उर्दू–हिन्दी द्वैभाषिक कोष परियोजना में उनका कार्य है । 1978 में मंहगाई के जमाने में भी त्रिलोचन ने मात्र आठ सौ, हजार रूपये पर लगातार सात साल इस तरह काम किया कि चेहरे पर शिकन नही आने दी।न वेतन–मान की चिन्ता न वेतन वृद्धि का गम [1]।

28 मार्च 1984 से 28 जुलाई 1990 तक सागर विश्वविद्यालय (म0प्र0) 'मुक्ति बोध–सृजन–पीठ' के अध्यक्ष रहे । यह अध्यक्षता स्थाई नही है । इसी बीच वह कविताएँ लिखते रहे । 11 नबम्बर से 31 मई 1992 ई0 में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कार्यरत रहे ।[2]

पुरस्कार और सम्मान:– त्रिलोचनजी अनेक पुरस्कारों और सम्मानो से सम्मानित किये गये, परन्तु उन्हें इनका रंचमात्र भी दर्प अथवा अहं नही है । समय–समय पर मिलने वाले पुरस्कार इस प्रकार है:–

(1) 1981 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (कृति–'ताप के ताए हुए दिन')

(2) 1983–84–उ0प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मान पुरस्कार ('दिगन्त' तथा 'गुलाब और बुलबुल' कृतियों पर)

(3) 9 फरवरी 1990–हिन्दी कविता के लिए मध्य प्रदेश का ('मैथिलीशरण गुप्त सम्मान ')

(4) 1989–90–हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शलाका सम्मान (मार्च 1992 में प्रदत्त) [3]

रचनाओं का परिवेश:– शास्त्रीजी की रचनाओं में युगीन संस्कृति और परिवेश आकार पा सका है । सागर में रहते हुए त्रिलोचन शास्त्री ने बहुत सी नई कविताएँ लिखी हैं, जो सागर के पास बहने वाली एक प्राचीन नदी–जिसका उल्लेख कालीदास ने किया है– को लक्ष्य करके लिखी गयी हैं । इस प्राचीन नदी का नाम था, दशार्ण । इसलिए

---

1. वर्तमान साहित्य–अगस्त 1992, विभूति नारायण राय, पृष्ठ–45
2. वहीं.
3. वर्तमान साहित्य–अगस्त 92–विभूति नारायण राय, पृष्ठ–45

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

आपने अपने नये संग्रह का नाम सोचा है:– 'दशार्ण की कविताएँ' । इनकी प्रकाशित काव्य रचनाएं इस प्रकार है:–

1. 'धरती' (काव्य संग्रह)
2. 'गुलाब और बुलबुल' (गजल और सॉनेट)
3. 'दिगन्त' (सॉनेट)
4. 'ताप के ताए हुए दिन' (सॉनेट)
5. 'शब्द' (सॉनेट)
6. 'उस जनपद का कवि हूँ' (सॉनेट)
7. 'अरघान' (काव्य संग्रह, सॉनेट)
8. 'तुम्हें सौपता हूँ' (काव्य संग्रह, सॉनेट)
9. 'अनकहनी भी कुछ कहनी है' (सॉनेट)
10. 'फूल नाम है एक' (सॉनेट)
11. 'प्रतिनिधि कविताएँ–त्रिलोचन (स. केदार नाथ सिंह)
12. 'देश काल' (कहानी – संग्रह)
13. 'सबका अपना आकाश' (काव्य संग्रह)
14. 'चैती' (काव्य संग्रह)
15. 'अमोला' (काव्य–संग्रह)
16. 'मुक्ति बोध की कविताएँ ' : सपांदन (साहित्य अकादमी, दिल्ली)
17. 'रोजनामचा' (डायरी)

1. **'धरती':–**

त्रिलोचन का पहला कविता संग्रह 'धरती' 1945 में प्रकाशित हुआ था, दूसरा संस्करण 32 साल बाद निकला । त्रिलोचन की आरम्भिक पहचान 'धरती' संग्रह से बनी, जिसने अनुभूतियों की संयमित अभिव्यक्ति के लिये पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया । साथ ही विस्तृत जीवन के काव्यात्मक आंकलन के लिये वे सराहे गये । 'धरती' में छायावादी कल्पना के माध्यम से नये समाज का सामाजिक स्वप्न है ।

2. **'गुलाब और बुलबुल':–**

'गुलाब और बुलबुल' नवम्बर 1956 में प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत संग्रह में गजलें और रूबाइयाँ और सॉनेट हैं । त्रिलोचन ने गजल, रूबाई, सॉनेट – जैसे हिन्दीतर कविता

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

के क्लासकीय काव्य रूपों में भी कविता रची है और हिन्दी के नये – पुराने काव्य रूपों तथा छंदों में भी । इनमें प्रेमपरक रचनाएँ अधिक हैं । परन्तु जीवन के अन्य पक्षों को भी यहाँ छोड़ा नहीं गया है ।

3. **'दिगन्त'**:–

'दिगन्त' का प्रकाशन जनवरी 1957 में हुआ था । 26 साल बाद इसका दूसरा संस्करण निकला था । 'दिगन्त' में सॉनेट हैं । ये प्रगतिवादी चिंतन से बंधे नहीं हैं । शास्त्री जी की प्रशस्ति की मूल हेतु 'धरती' है । कवि 'धरती' से 'दिगन्त' तक पहुंचा है । निश्यच ही प्रगति के इन तीनों चरणों में कवि का व्यक्तित्व बढ़ा, पनपा और उजागर हुआ। 'दिगन्त' के सॉनेटों में उनके जीवन के चरित्र अधिक हैं । इसके बाद 23 साल तक खामोशी । कवितायें तो लिखते रहे, संकलन छपने की नौबत न आयी ।

4. **'ताप के ताए हुए दिन'**:–

लम्बे अन्तराल के बाद 1980 में त्रिलोचन का काव्य संग्रह 'ताप के ताए हुए दिन' प्रकाशित हुआ । इधर के संग्रहों ने त्रिलोचन के महत्व को प्रतिष्ठा दी जो पहले सम्भव नहीं हुयी थी । 1981 में 'ताप के ताए हुए दिन' कविता संग्रह पर 'साहित्य अकादमी' पुरूस्कार मिला । अब तो त्रिलोचन के घर पर प्रकाशक आने लगे थे ।

5. **'शब्द'** :–

'शब्द' काव्य संग्रह का प्रकाशन सन् 1980 में हुआ था ।

6. **'उस जनपद का कवि हूँ'**:–

'उस जनपद का कवि हूँ' काव्य संग्रह सन् 1981 में प्रकाशित हुआ ।

7. **'अरघान'**:–

त्रिलोचन शास्त्री का काव्य संग्रह 'अरघान' 1983 में प्रकाशित हुआ ।

8. **'तुम्हें सौंपता हूँ'**:–

प्रस्तुत कविता संग्रह सन् 1985 में प्रकाशित हुआ ।

9. **'अनकहनी भी कुछ कहनी है'**:–

'अनकहनी भी कुछ कहनी है' कविता संग्रह सन् 1985 में प्रकाशित हुआ ।

10. **'फूल नाम है एक'**:–

प्रस्तुत संग्रह भी सन् 1985 में प्रकाशित हुआ ।

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

11. **'प्रतिनिधि कविताएँ' – त्रिलोचन :–**

इसके सम्पादक केदार नाथ सिंह हैं । इसका प्रकाशन 1985 में हुआ है ।

12. **'देश काल':–**

'देश काल' एक कहानी संग्रह है।इसका प्रकाशन सन् 1986 में हुआ था ।

13. **'सबका अपना आकाश':–**

'सबका अपना आकाश' का प्रकाशन 1987 में हुआ था ।

14. **'चैती':–**

'चैती' का प्रकाशन 1987 में हुआ ।

15. **'अमोला':–**

'अमोला' त्रिलोचन का अन्तिम काव्य – संग्रह है । इसका प्रकाशन 1990 में हुआ ।

16. **'मुक्तिबोध की कविताएँ':–**

'मुक्तिबोध की कविताएँ' का संपादन साहित्य अकादमी, दिल्ली से हुआ था । इसका प्रकाशन 1991 में हुआ था ।

17. **'रोजनामचा':–**

'रोजनामचा' त्रिलोचन शास्त्री की डायरी है । इसका प्रकाशन 1993 में हुआ ।

त्रिलोचन जी के चौताल को सुनकर "द्विजदैनी" ने उन्हें लिखने के लिये उत्साहित किया । तब फिर इन्होने लिखना प्रारम्भ किया । 1932 तक उन पर छाया वादी प्रभाव रहा फिर वे उनकी लिखने की शैली बन गयी । 1935 में उन्होने गद्ययात्मक कविताएँ लिखीं । त्रिलोचन ने कविता , सॉनेट, गजलें, गीत, चतुष्पदियाँ, बरवै, कहानी, एकांकी काव्य – नाटक और डायरी – सब पर अपनी समर्थ लेखनी चलाई है ।

आपका आरम्भिक विकास उस दौर में हुआ जब छायावाद समाप्ति की ओर था, और प्रगतिवाद के लिये जमीन तैयार हो रही थी । हिन्दी कविता के एक युग से दूसरे युग में संक्रमण के उस दौर के आप साक्षी रहे हैं । बनारस संस्कृत पढ़ने के ख्याल से गये थे । बनारस में जब प्रगतिशील लेखक संघ का गठन हुआ तो उसके लिये आपने भी काम किया , सागर में आपका जीवन निस्संग होने के कारण आपने अपना काम किया ।

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

त्रिलोचन ने गद्य कम लिखा है । उन्होने अनेक कथा – कविताएँ लिखीं हैं । उन्होने शुरूआत रूमानी कविताओं से की थीं, फिर धीरे – धीरे भारतीय जनता खासकर भारतीय किसानों के जीवन को समझने की कोशिश की । उनकी कविता में एक दर्प है, और वह संघर्ष में लगी हुयी जनता का दर्प है । अक्सर त्रिलोचन अपनी बात वेद और बाल्मीकि से शुरू करते हैं । वे संस्कृत के विद्वान हैं । जो विषमताएँ उनके जीवन में दिखाई देती हैं, वे उनकी रचनाओं में भी प्रच्छन्न रूप से विद्यमान हैं । ऊपर से देखने में कवितायें ऊबड – खाबड मालूम होती हैं, लेकिन अनुभव की विविधता के कारण, वह अत्यंत आकर्षक हैं ।

व्यक्ति के रूप में ही नहीं, त्रिलोचन कवि के रूप में भी विचलित करते हैं । उनकी कविता लोक – जीवन के निकट की कविता है । अवधी जीवन के अनेक प्रसंग उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देते हैं । अवधी जीवन के अनेक शब्दों का प्रयोग त्रिलोचन ने पहली बार किया है । त्रिलोचन अकेले कवि हैं जिनकी रचनाओं में अपने जनपद का दुख – सुख, विंसगतियाँ, प्रमाणिकता से अभिव्यक्त हुई हैं ।

धक्काखाने वाले , पीडित, दुखी और रोटी के लिये परेशान लोग त्रिलोचन की कविताओं के स्थाई भाव हैं । भोले – भाले किसान और पूर्ण सर्वहारा गाँवों के श्रमिकों का जीवन और जीवनानुभव से प्राप्त जीवन और जगत सम्बन्धी बातें और उनकी संवेदना को निर्मित , विकसित उनकी अभिव्यक्ति और सक्षम बनाती है ।

छायावाद के बाद वाली पीढी के कवियों में त्रिलोचन शास्त्री जैसे काव्य – विद ओर शास्त्रप्रज्ञ कवि बहुत कम हुये हैं । त्रिलोचन की कविता शास्त्रों से नहीं बल्कि जीवन से मिली है । इसलिये जहाँ एक ओर उनके शिल्प की आर्षता है, वहाँ दूसरी ओर उनके स्वर पूरी तरह आधुनिक भी हैं ।

त्रिलोचन की कविता नें हिन्दू जाति की संघर्षशील चेतना की जड़ों को सींचा है और ये जड़ें अतीत के साहित्य में बहुत गहरे फैली हुयी हैं । उनमें सृजन की अपार शक्ति है । और गहराई को छूने, मर्म को सांस्कृतिक अर्थ में पकड़ने की सहज क्षमता है । त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कविताओं में स्वानुभूत जीवन स्थापित किया है ।

त्रिलोचन सूक्षम पर्यवेक्षण के कवि हैं । केदारनाथ अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र आदि नये उठते हुये कवियों में त्रिलोचन का स्थान

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

महत्वपूर्ण है । भाव और टेकनीक दोनों की दृष्टि से त्रिलोचन की कविता एक ठेठ भारतीय – जन की कविता है । यह आदमी अब भी एक समर्पित व्यक्ति है – एक गहरे अर्थ में अब भी आस्थाशील है । इसके पास आस्था की, अनुराग की और मानव – करूणा की विनयशीलता है । अवध प्रदेश के सामान्य परिवारी व्यक्ति हैं । जीवन के आर्थिक अभाव और परिणाम को भोगा है, इसलिये रचनाओं में कृत्रिमता न होकर अनुभूतिक निष्ठा है । शास्त्री जी की भाषा में अभी भी पुराने संस्कारों का अवशेष है । उनका जीवन पत्रकारिता के परिवेश में बीता है, इसलिये स्पष्टवादिता भी है ।

भूख, उपवास और बेरोजगारी पर जैसी अनुभूति – तीव्रता त्रिलोचन की कविताओं में है, वैसी अन्य किसी प्रगतिशील कवि में नहीं । त्रिलोचन निराला के बाद और उन्हीं की परम्परा में आने वाले बहुत ही समर्थ कवि हैं । वह उस संधि पर खड़े हैं, जहां से प्रगतिवादी और प्रयोगवादी आन्दोलन एक – दूसरे से अलग होते हैं ।

त्रिलोचन प्रगतिवाद के सशक्त कवि हैं । उनकी कविताओं में एक ओर सादगी विद्यमान है तो दूसरी ओर मिट्टी की सोंधी गंध भी । इनकी कविता कहीं भी अपने औसत धरातल से नीचे नहीं उतरी है । इनकी कविता आकार में छोटी है परन्तु प्रभाव में तीव्र है । चूंकि त्रिलोचन ने व्यावहारिक जीवन में स्वंय संघर्ष किया है, इसलिये उनकी कविताओं में दैन्य अभाव और संघर्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है । इनकी कविता संघर्ष– जन्य अटूट विजय भाव और शक्ति से परिपूर्ण है । कवि ने मानव के रागात्मक पक्ष का बराबर ध्यान रखा है, पर कहीं – कहीं इनकी कविता बौद्धिक्ता के आधिक्य के कारण रूखी और वेगहीन हो गयी है ।

त्रिलोचन जी की शब्द – साधना यह है कि उन्होने अपनी कविता के लिये कोई नई भाषा नहीं गढी बल्कि पहले से मौजूद जीवित भाषा को उसकी जीवन्तता में ग्रहण किया । उस भाषा में उन लोगों को अपने आप बोलने दिया जिन्हें अभी तक बोलने का मौका नहीं मिला था ।

त्रिलोचन के काव्य संसार को और व्यापक तौर पर पाने के लिये धरती के जन से उसके जन – रागों से जुडना जरूरी है । त्रिलोचन जैसा मोटा, झोटा पहनने वाले, चना चबेना खाने वाले आदमी हैं वैसा ही उनका राग भी त्रिलोचन के शरीर के कम बल को देखकर आज के रचनाकार की तस्वीर तो नहीं, भारतीय परम्परा के किसान की तस्वीर

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

जरूर कौंध जाती है । जिसने जीवन में सब कुछ सहा है और भोगा है ।

सॉनेट जैसे विजातीय ऐंचें – बैचें काव्य रूप को अपनी जन परम्परा में ढालने का काम त्रिलोचन जैसे साधक रचनाकार के ही बूते की बात है, क्योंकि जैसा जातीय जन की बानी और पानी है वैसा ही ओज और राग का समिश्रण इस प्रकार से किया है कि सॉनेट जैसा विजातीय छंद जातीय छंद बनकर, हिन्दी कविता की एक निधि बन गया है।

छायावादोत्तर युग के हिन्दी कवियों में चतुर्दशपदी – काव्य विधा की दृष्टि से त्रिलोचन शास्त्री सर्वाधिक गौरव के अधिकारी हैं । उन्होंने इस दिशा में सर्वाधिक सफल यात्रायें की हैं । त्रिलोचन जी हिन्दी में "सॉनेट" के एक तरह से पर्याय ही बन गये हैं। शास्त्री जी मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने 1935 में सॉनेट लिखना प्रारम्भ किया और 1940 तक लिखते रहे, फिर छूट गये और तकरीबन 9 वर्ष के अंतराल के बाद सन् 1949 में फिर सॉनेट लिखे जो 1955 तक लिखते रहे और फिर 1962 में सॉनेट लिखे ।इसके बाद सन् 1975 में थोडे बहुत, और फिर बाद में कुछ नहीं लिखा । सॉनेटों के लिये त्रिलोचन अधिक जाने गये[1] ।

हिन्दी में सॉनेट लोचन प्रसाद पाण्डे, जय शंकर प्रसाद ने लिखे । इसके अतिरिक्त नरेन्द्र शर्मा, बच्चन फिर बाद को निराला ने भी सॉनेट लिखे ।

पिछले 50 वर्षों से त्रिलोचन की साहित्य – साधना अभिराम चल रही है ।

वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से – कवि त्रिलोचन की रचनाओं में क्रमशः विकास मिलता है, शैली आद्यंत सरल और सुबोध है । छायावादी शैली में कुछ रचनायें अपवाद हैं । कवि में कल्पना की शक्ति है । वातावरण का चित्रण कने में कवि को सफलता मिली है । अधिकांश रचनायें मुक्त छंद में हैं । अनेक रचनाओं में संगीत और लय का ध्यान भी रखा गया है । काव्य रूपों के प्रति भी उन्होने प्रयोग किये हैं । उर्दू की गजलों और रूबाइयों की आत्मा हिन्दी की है । त्रिलोचन के सॉनेट (चतुर्दशपदी) नये काव्य प्रयोग में अपना स्थान रखते हैं ।

---

1. सापेक्ष – पृष्ठ – 253

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

अध्याय - 2

चतुर्दशपदी काव्य स्वरूप विश्लेषण

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University